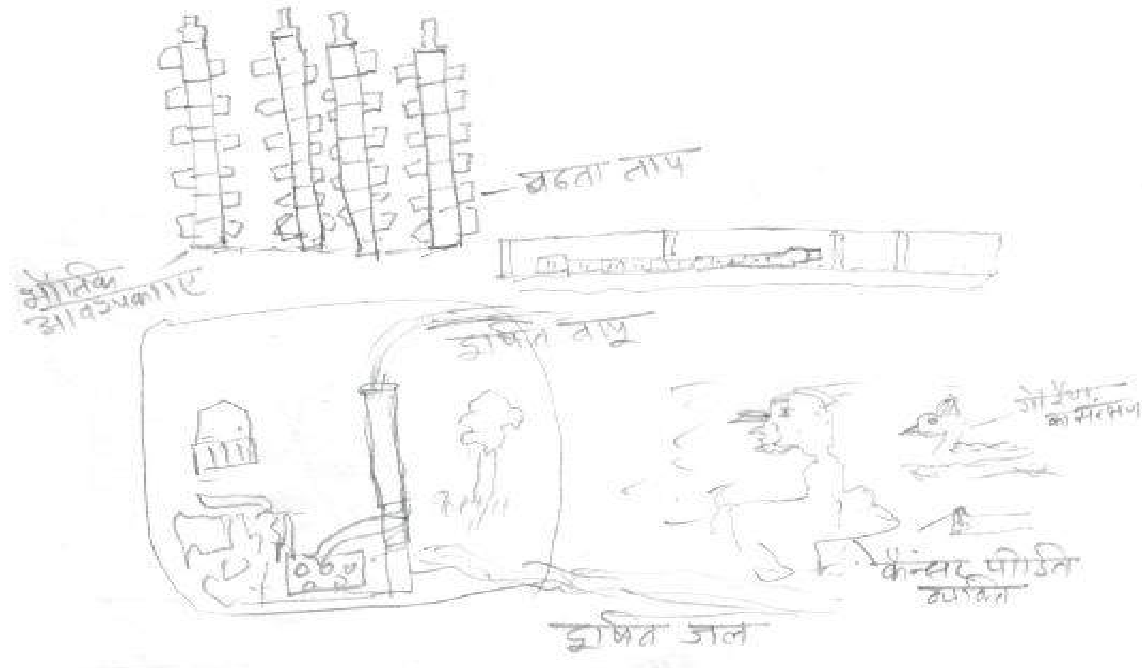

विकास

ज्ंइसम वि ब्वदजमदजे

µडॉ. सतनाम सिंह

विकास के विभिन्न वैकल्पिक–प्रतिरूप या मॉडल :

निम्नलिखित बहुविकल्पीय प्रश्नों में से सही उत्तर का चयन कीजिए।

रिक्तस्थानों की पूर्ती कीजिए :

निम्नलिखित का मिलान कीजिए :

विकास का मॉडल देश

निम्नलिखित वाक्यों के सामने सही और गलत का चिह्न लगाइए :

अतिलघुउत्तरीय प्रश्न

लघुउत्तरीय प्रश्न

दीर्घउत्तरीय प्रश्न

इस पाठ के पश्चात हम :

लाल बहादुर शास्त्री के समक्ष चुनौतिया

1952 से 1967 तक के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस पार्टी की स्थिति

तालिका–2

उपरोक्त कार्टून के आधर पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

उपरोक्त मानचित्रा के आधर पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

निम्नलिखित परिच्छेद/अवतरण को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधरित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

3. निम्न में मिलान कीजिए।

स्तम्भ ;कद्ध स्तम्भ ;खद्ध

गुट निरपेक्षता की नीति : गुटनिरपेक्षता आन्दोलन के संस्थापक देश–भारत के पं नेहरू

वउ मत न सस इल

৳ ाममच वज

अथवा

क्या आप जानते हैं?

उपलब्धियाँµ

रिक्त स्थान भरो।

साम्यवाद से पूँजीवाद की ओर संक्रमण एवं शॉक थेरेपी

विशेषताएँµ

परिणामµ

7. गोर्वाचेव द्वारा लाए गये दो सुधारों का उल्लेख करते हुए यह बताए कि इसका सोवियत संघ

न्याय के सिद्धान्त प्रतिपादक प्रतिपादित विषय

मनुष्य के व्यवहार के इन्द्रिय तृष्णा शौर्य बुद्धिमत्ता तीन मुख्य स्रोत

राल्स के न्याय के नियम

प्रमुख न्याय आदर्श

रिक्त स्थानो की पूर्ति कीजिए।

निम्नलिखित वाक्यों को गलत और सही के रूप में चुनिए।

निम्नलिखित का सही मिलान कीजिए।

सिद्धान्त विद्वान का नाम

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 150 शब्दों से अधिक नहीं होने चाहिए।

राजनैतिक विज्ञान शिक्षण

2016

स्वाध्यायान्मा प्रमदः

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
दिल्ली

;ब्द्ध राज्य शैक्षिक अनुसंधन एवं प्रशिक्षण परिषद्, दिल्ली
1300 ;प्रतियांद्ध पफरवरी– 2016
ैठछरू 978.93.85943.26.3

मुख्य सलाहकार

पुण्य सलीला श्रीवास्तव, मुख्य सचिव ;शिक्षाद्ध, दिल्ली सरकार
परामर्श मार्गदर्शन अनिता सेतिया, निर्देशिका, रा.शै.अ.प्र.परिषद्, दिल्ली डॉक्ृ प्रतिभा शर्मा, उप–निर्देशिका, रा.शै.अ.प्र.परिषद्, दिल्ली
शैक्षिक समन्वयक एवं नोड्ल ऑपिफसर डॉक्ृ सतनाम सिंह, वरिष्ठ प्रवक्ता, डाईट ;उत्तर–पूर्वद्ध, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
लेखन समूह डॉ.सतनाम सिंह वरिष्ठ प्रवक्ता, डाईट ;उत्तर–पूर्वद्ध, दिलशाद गार्डन, दिल्ली डॉ.भगवती प्रसाद ध्यानि उप–प्रधनाचार्य, जी.बी.एस.एस.विद्यालय, ब्लॉक–27, त्रिलोकपुरी तपराज दत्त प्रवक्ता रा.व.स.स. विद्यालय, न्यू कोण्डली, दिल्ली रमा शंकर सिंह उप–प्रधनाचार्य, शिक्षा निदेशालय, दिल्ली डॉ.रकम सिंह प्रवक्ता, शिक्षा निदेशालय, दिल्ली डॉ.के.एम.तिवारी उप–प्रधनाचार्य, शिक्षा निदेशालय, दिल्ली

मदल लाल साहनी

सी.बी.एस.ईसाध्न सेवी एवं पूर्व प्रवक्ता शिक्षा निदेशालय, दिल्ली

संपादन
डॉक्ृ सतनाम सिंह, वरिष्ठ प्रवक्ता, डाईट ;उत्तर–पूर्वद्ध, दिलशाद गार्डन, दिल्ली डॉक्ृ नीलम, वरिष्ठ प्रवक्ता, डाईट राजेन्द्र नगर, दिल्ली भाषा संपादन डॉक्ृ राकेश सिंह, उप प्रधनाचार्य, शिक्षा निदेशालय पुनरीक्षण
डॉक्ृ आर. के.पाण्डेय एसोसिएट प्रोपेफसर, जामिया हमदर्द, दिल्ली
प्रकाशन प्रभारी सपना यादव
प्रकाशन मंडल नवीन कुमार, राध, जयभगवान

प्रकाशक : राज्य शैक्षिक अनुसंधन एवं प्रशिक्षण परिषद्, दिल्ली मुद्रक : एजूकेशनल स्टोर्स, एस–5, बुलन्दशहर रोड, इण्डस्ट्रीयल एरिया, साईट–९ गाजियाबाद ;उ.प्र.द्ध

आमुख

आज विद्यालयी शिक्षा के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती बच्चों द्वारा अर्जित अंकों की कसौटी पर यथार्थ–ज्ञान की है। आज छात्रा–छात्रााएं परीक्षा में तो अच्छे अंकों में उत्तीर्ण हो जाते हैं किन्तुऋ जब अर्जित ज्ञान को सामाजिक–राजनैतिक परिवेश से जोड़ने की बात आती है तो असली कसौटी सामाने आती है। अध्किांश छात्रा–छात्रााएं प्राप्त पुस्तकीय ज्ञान को अपने परिवेश राज्य, राष्ट्र व अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं से जुड़ने में अपने को असमर्थ पाते हैं। इसी दृष्टि को सम्मुख रख प्रस्तुत सामग्री को क्रियाकलापों के साथ कुछ उदाहरणों सहित प्रस्तुत किया गया है। जिससे छात्रा–छात्रााएं पुस्तकीय ज्ञान के अतिरिक्त अन्य साध्नों द्वारा ज्ञान को तर्कशक्ति, वाद–विवाद, लेखन, भाषण, समाचार माध्यमों के विश्लेषण द्वारा समझकर किसी निष्कर्ष पर पहुँच सकेंगे। यहां क्रियाकलाप देने का उद्देश्य छात्रों का बोझ बढ़ाना नहीं हैऋ बल्कि सहज चर्चा व खोज द्वारा अध्कि जानकारी एकत्रा करके उसे प्रयोग में लाने से है। अतः अध्यापकों से यह अपेक्षा की जाती है कि शिक्षक अपने छात्रों के साथ स्वयं तत्कालिक एवं समसमायिक–समसामयिक घटनाओं, राजनीतिक परिदृश्य व इतिहास में परिवर्तन करने वाले विचारों को 'आज की कसौटी' पर परखने हेतु क्रियाकलापों का निर्माण कर सामग्री एकत्रा करें व किसी निष्कर्ष पर पहुँचने की कोशिश करें। प्रस्तुत सामग्री छात्रों एवं शिक्षकों के लिए उपयोगी होगी इसी सद्इच्छा एवं शुभकामना के साथ आपके बहुमूल्य सुझावों का हमेशा की भाँति अभिलाषी...

μडॉक्ृ सतनाम सिंह

मॉडल अध्किारी ;राजनैतिक विज्ञानद्ध

विषय–सूची

1. विकास की संकल्पना 05
2क्ृ कांग्रेस व्यवस्था की चुनौतियाँ और पुनर्स्थापन 14
3क्ृ भारत के विदेश सम्बन्ध 31
4क्ृ दो ध्रुवीयता का अन्त 45
5क्ृ सामाजिक न्याय की संकल्पना 55

1

fodkl dh ladYiuk

(Concept of Development)

विकास की संकल्पना मुख्यतः द्वितीय विश्वयुद्ध ;1939–1945द्ध के पश्चात नवोदित देशों के मार्गदर्शन के उद्देश्य से विकसित की गयी थी इन देशों को सामूहिक रूप से विकासशील देश कहा जाता है। वैसे विकास के विचार के आरम्भिक संकेत उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान और बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध के अनेक सिद्धान्तों में मिलते हैं। प्ंसीसी दार्शनिक ऑगस्ट कॉम्टे ने यह सिद्धान्त रखा था कि ज्ञान–विज्ञान की उन्नति के पफलस्वरूप हमारा सामाजिक संगठन सैन्य समाज से औद्योगिक समाज की ओर अग्रसर होता है। विकास की अवधारणाएँ

विकास के सम्बन्ध में अनेक अवधरणाएँ हैं। पाश्चात्य अवधरणा केवल भौतिक वस्तुओं की समृद्धि और उन्नति को ही विकास मानती है आधुनिक सन्दर्भ में विकास के स्वीकृत प्रतीक हैंμकम्प्यूटरीकरण, औद्योगिकीकरण, सक्षम परिवहन और संचार, विशाल शिक्षा व्यवस्था, उन्नत और आधुनिक चिकित्सा सुविधएँ, विकास की इस अवधरणा को यूरोप केन्द्रित अवधरणा भी कहा जाता है। विकास की भारतीय अवधरणा में ''तेन त्यक्तेन भु×जथा'' को महत्व देते हुए भौतिक वस्तुओं का अधिकाध्कि परित्याग एवं आध्यात्मिक उन्नति को ही पूर्ण विकास माना गया है जिसे वर्तमान की सतत् या धारणीय विकास की अवधरणा माना जाता है। किन्तु वर्तमान उपनिवेशोत्तर भारत में विकास का दूसरा चेहरा दिखायी देता है। जहाँ उपनिवेशीकरण, सामाजिक–भेदभाव, प्रादेशिक–असमानताएँ तथा उपेक्षीकरण अपने चरम पर है। fodkl dh *vk/qfud vo/kj.kk* ik'pkR; vo/kj.kk ls vf/d esy [kkrh gS vkSj bl vo/kj.kk ds vk/kj ij ;g Hkh ugha dgk tk ldrk fd nqfu;k ij bl fodkl dk udkjkRed

izHkko gh iM+k gSA dqN ns'kksa us viuh vkfFkZd mUufr dh nj c<+kus vkSj xjhch ?kVkus esa Hkh dqN liQyrk gkfly dh gSA ysfdu dqy feykdj vlekurkvksa esa xEHkhj deh ugha vk;h gS vkSj fodkl'khy ns'kksa esa xjhch ,d xEHkhj leL;k cuh gqbZ gSA ;g ekuk x;k fd ;fn fodkl gksxk rks bldk iQk;nk uhps dh vksj fjl&fjldj lekt ds lokZf/d fu/Zu ,oa oafpr rcdksa rd igqapsxk vkSj lHkh dk thouLrj lq/jsxkA ysfdu blds foijhr nqfu;k esa vehj vkSj xjhc ds chp dh [kkbZ c<+rh x;hA vc fodkl dh O;kid vo/kj.kk viukus dh vko';drk gS] ftlls lHkh yksxksa ds thou dh

गुणवत्ता में वृद्धि हो सके। इसका कारण विकास को आर्थिक उन्नति के सूचकांक की दर से मापना अपर्याप्त होगा। यू.एन.डी.पी. का वार्षिक मानव विकास प्रतिवेदन इस प्रतिवेदन में साक्षरता और शैक्षिक स्तर, आयु सम्भाविता और मातृ–मृत्यु दर जैसे सामाजिक संकेतकों के आधर पर विभिन्न देशों का दर्जा निर्धरित किया जाता है। इसी स्तर को मानव विकास सूचकांक कहा जाता है। इस प्रक्रिया में अध्किाध्कि लोगों को उनके जीवन में अर्थपूर्ण विध् से अनेक विकल्पों को चुनने की अनुमति होनी चाहिए। इससे पहली शर्त है आहार, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी बुनियादी जरूरतों की पूर्ति होनी चाहिए जिससे रोटी के साथ–साथ कपड़ा, मकान, गरीबी हटाओ, बिजली, सड़क, पानी जैसी आवश्यकताएँ भी शामिल है। जिन देशो में नागरिक इन वस्तुओं या आवश्यकताओं से वंचित रहते हैं उन्हें विकसित नहीं कहा जा सकता है। मानव विकास की कसौटियाँ

विकास लोगों की विभिन्न विकल्पों तक की पहुँच को बढ़ाता है। इसमें शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधओं और सशक्तिकरण में वृद्धि शामिल है। इसमें भौतिक पर्यावरण से लेकर आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक स्वतन्त्राता के सभी विकल्प शामिल है। इस प्रकार ''मानव विकास का अर्थ है लोगों के लिए विकल्पों को बढ़ाना तथा जनकल्याण के स्तर को ऊंचा उठाना''। इस प्रकार मानव विकास को विभिन्न कसौटियों पर परखा जा सकता है :

;1द्ध भौतिक और आध्यात्मिक उन्नतियों का समन्वय : मनुष्य को भौतिक पदार्थों के संचय के साथ–साथ आध्यात्मिक उन्नति और मानसिक शान्ति को विकास के सूचकांक में शामिल किया जाना चाहिए। जिससे वह परम लक्ष्य को प्राप्त कर सके।

;2द्ध आर्थिक सुदृढ़ता एवं उत्पादकता : इसमें व्यक्ति कृषि और उद्योगों में अध्कि उत्पादन करके आर्थिक सुदृढ़ता प्राप्त कर सकता है जिससे वह दीर्घ और स्वास्थ्य जीवन व्यतीत कर सके और ज्ञानार्जन करके सम्मानपूर्ण जीवन जी सके।

;3द्ध अवसर की साम्यता : इसका अर्थ है आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक तथा लैंगिक साम्यता स्थापित करके समान अवसरों की उपलब्ध्ता कराना।

;4द्ध सतत्, पोषणीय अथवा धरणीय विकास : प्राकृतिक संसाध्नों का वर्तमान पीढ़ी द्वारा इस प्रकार उपभोग करना कि पर्यावरण को क्षति न हो तथा आने वाली पीढ़ियों के लिए पर्याप्त संसाध्न बच जाए।

;5द्ध राजनीतिक सशक्तिकरण : इसका अर्थ है कि सरकार लोकतान्त्रिक भावनाओं को ध्यान में रखकर ऐसी नीतियाँ बनाए जिससे जनता के अध्किारों का सम्मान हो और राष्ट्रीय राजनीति में स्वतन्त्रातापूर्वक भाग ले सके।

विकास के विभिन्न वैकल्पिक–प्रतिरूप या मॉडल :

;1द्ध बाजार समाज प्रतिरूप या उदारवादी लोकतान्त्रिक प्रतिरूप : पश्चिमी देशों में विकास के उदारवादी लोकतान्त्रिक मॉडल को अपनाया गया है इस प्रतिरूप के अन्तर्गत यह तर्क दिया गया कि तीसरी दुनिया के देशों को अपनी अर्थव्यवस्था, मुक्त व्यापार और अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्ध के लिए खुली रखनी चाहिए। इसमें आर्थिक समृद्धि को विकास की अनिवार्य शर्त माना गया। साम्यवाद के पतन के पश्चात्

यह प्रतिरूप विकासशील देशों की भी प्रमुख शक्ति बन चुका है। इसमें समाज की तुलना में व्यक्ति को अध्कि महत्व प्रदान किया जाता है इसमें निजीकरण और वैश्वीकरण पर अध्कि बल दिया गया है। इसे पूंजीवादी मॉडल भी कहा जा सकता है।

;2द्ध विकास का साम्यवादी मॉडल या प्रतिरूप : साम्यवादी प्रतिरूप का प्रारम्भ कार्लमार्क्स की विचारधरा के आधर पर सोवियत संघ में हुई बोल्शेविक क्रान्ति से हुआ इसके पश्चात् पोलैण्ड, हंगरी, रोमानिया, चीन, क्यूबा, वियतनाम और अन्य साम्यवादी देशों ने इस प्रतिरूप को अपनाया इसकी विशेषताएँ निम्नलिखित हैं।

(i) सभी आर्थिक संसाध्नों जैसेμभूमि, उद्योगों, बैंकों, रेलवे आदि पर राज्य का पूर्ण स्वामित्व।

;पपद्ध केन्द्रीकृत योजनाएँ।

;पपपद्ध औद्योगिकीकरण की तेज रफ्रतार और भारी उद्योगों पर बल।

बाजारोन्मुख निर्णयों का अभाव, नागरिकों की स्वतन्त्राताओं पर प्रतिबन्ध्, एकदलीय व्यवस्था, नौकरशाही का बोलबाला आदि के कारण साम्यवाद असपफल रहा। 1991 में सोवियत संघ का विघटन हुआ और पूंजीवाद को अपना लिया गया।

;3द्ध विकास का मिश्रित अर्थव्यवस्था का भारतीय मॉडल या प्रतिरूप : इस प्रतिरूप में निजी और सार्वजनिक दोनों उद्यमों को अर्थव्यवस्था के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका सौंपी गयी। सार्वजनिक क्षेत्रा में आधारभूत उद्योगों को विकसित किया गया तथा सरकार ने निजी क्षेत्रा के लिए नियामक की भूमिका का निर्वहन किया। प्रारम्भ में भारत ने लोककल्याकारी राज्य के रूप में काम किया किन्तु उदारीकरण और वैश्वीकरण के प्रभाव से 1991 में नई आर्थिक नीति को अपनाया जिसके मुख्य तत्व थे :

;पद्ध नई औद्योगिक नीति जिसमें अध्कितर उद्योगों को लाइसेन्स मुक्त किया गया

;पपद्ध कर व्यवस्था में सुधर

;पपपद्ध श्रम कानूनों में सुधर

;पअद्ध निजीकरण

;अद्ध बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का भारतीय अर्थवव्यवस्था के सभी क्षेत्राों में प्रवेश

;अपद्ध सभी आर्थिक क्रियाकलापों में विदेशी पूंजीनिवेश की अनुमति

;4द्ध विकास का गाँधेवादी मॉडल या प्रतिरूप : इस प्रतिरूप की विशेषताएँ हैं :

;पद्ध कृषि आधरित अर्थव्यवस्था

;पपद्ध कुटीर उद्योगों का महत्व

;पपपद्ध श्रम आधरित अर्थव्यवस्था

;पअद्ध न्यासिता का सिद्धान्त

;अद्ध बड़े उद्योगों, शहरीकरण और उपभोक्तावादी संस्कृति का विरोध्

;5द्ध कल्याणकारी राज्य का प्रतिरूप : इसका प्रारम्भ सर्वप्रथम बैबरीज की रिपोर्ट के आधर पर ब्रिटेन में हुआ था। इस राज्य का उद्देश्य बेरोजगारी, वृद्धावस्था, बीमारी और अक्षमता की स्थिति में अपनी जनता की आर्थिक सहायता करना है।

विकास की वह कीमत जो समाज और पर्यावरण को चुकानी पड़ी

;1द्ध बड़े बाधें के निर्माण, औद्योगिक गतिविध्यिों और खनन ;2द्ध वनों के नष्ट ;3द्ध ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन की वजह

कार्यों की वजह से लोगों को घरों और क्षेत्रों से विस्थापन तथा आजीविका के खोने से दरिद्रता में वृद्धि। जिसका एक उदाहरण नर्मदा नदी पर सरकार सरोवर परियोजना है।

होने और वाणिज्य उद्यमों के स्थापित होने से सुनामी का कहर।

से आर्कटिक और अंटार्कटिक ध्रुवों पर बर्पफ का पिघलना जिससे बाढ़ आने और बांग्लादेश और मालद्वीव जैसे निम्न भूमि वाले इलाकों के डूबने की आशंका।

इस विनाशकारी विकास से समाज और पर्यावरण को बचाने के लिए हमें धरणीय अथवा सतत् अथवा पोषणीय विकास की आवश्यकता है। सतत् अथवा पोषणीय विकास क्या है?

सतत् विकास की अवधरणा 1987 में पर्यावरण और विकास सम्बन्धी विश्व आयोग द्वारा प्रस्तुत की गयी जिसने विकास को परिभाषित किया। ''आने वाली पीढ़ियों की क्षमता पर कोई प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए किए जाने वाले विकास कार्यों को सतत् विकास कहते हैं। सतत् विकास के लिए सर्वाध्कि आवश्यक तत्व है पर्याप्त पर्यावरण संरक्षण इसके बिना विकास को क्षति होगी और विकास के बिना पर्यावरण संरक्षण का कोई महत्व नहीं होगा। इस समस्या के समाधन के लिए जून 1992 में ब्राजील के 'रियो द जनेरियो' में पर्यावरण और विकास पर एक सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसे ''पृथ्वी सम्मेलन'' के नाम से जाना गया। जिसमें निम्नलिखित सुझाव दिए गए :

;पद्ध जनसंख्या स्थिरीकरण

;पपद्ध अपशिष्टों में कमी

;पपपद्ध प्रदूषण नियन्त्राण

;पअद्ध बाजार अर्थव्यवस्था का शुद्धीकरण

;अद्ध गरीबी उन्मूलन

विकास का विश्व स्वीकार्य मॉडल या प्रतिरूप साम्यवादी, पूंजीवादी तथा लोकतान्त्रिाक उदारवादी मॉडल या प्रतिरूप की अनेक त्राुटियों के कारण विकास के लिए विश्व में स्वीकार्य प्रतिरूप की निम्नलिखित विशेषताएं होनी चाहिए।

;1द्ध जीवन की आधरभूत आवश्यकताओं की पूर्ति

;2द्ध भौतिक के साथ–साथ आध्यात्मिक विकास

;3द्ध सभी स्तरों पर लोकतन्त्रा

;4द्ध पर्यावरण की क्षति को कम करने वाला धरणीय अथवा पोषणीय विकास

;5द्ध जनजातीय समुदायों और विस्थापित लोगों के खोए हुए अध्किारों को वापस लौटाना।

अवतरण पर आधरित प्रश्न

;1द्ध निम्नलिखित अवतरण को पढ़िये और उसके नीचे लिखे प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

''विकास की अवधरणा ने बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में महत्वपूर्ण सपफलता हासिल की उस समय एशिया और अ्रफीका के बहुत से देशों ने राजनीतिक आजादी हॉसिल की थी। अध्कितर देश कंगाल बना दिये गए थे और उनके निवासियों का जीवन स्तर निम्न था शिक्षा, चिकित्सा और अन्य सुविधएं कम थीं। इन्हें अक्सर 'अविकसित' या 'विकासशील' कहा जाता था। उनका मुकाबला पश्चिमी यूरोप के अमीर देशों और अमेरिका से था।

;पद्ध विकास की अवधरणा ने कब महत्वपूर्ण सपफलता हासिल की थी।

;पपद्ध विकास की अवधरणा के समय किस महाद्वीप के लोगों ने या देशों ने राजनीतिक आजादी हॉसिल की थी?

;पपपद्ध विकासशील देश किन्हें कहा गया और इनका मुकाबला अमीर देशों से क्यों था?

;2द्ध निम्नलिखित अवतरण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

''विस्थापित लोगों ने अपनी इस नियति को हमेशा निष्क्रियता से स्वीकार नहीं किया। आपने नर्मदा बचाओ आन्दोलन के बारे में सुना होगा यहां नर्मदा नदी पर सरदार सरोवर योजना के तहत बनने वाले बांधों के खिलापफ आन्दोलन चल रहा है। बड़े बाँधें के इन समर्थकों का दावा है कि इससे बिजली पैदा होगी, कापफी बड़े इलाके में जमीन की सिंचाई में मदद मिलेगी और सौराष्ट्र व कच्छ के रेगिस्तानी इलाके को पेयजल भी

उपलब्ध होगा। बड़े बांधें के विरोधी इन दावों का खण्डन करते हैं। इसके अलावा अपनी जमीन के डूबने और उसके कारण अपनी जीविका के छिनने से दस लाख से अध्कि लोगों के विस्थापन की समस्या पैदा हो गयी है। इनमें से अध्किांश लोग जनजाति या दलित समुदायों के है, और देश के अतिवंचित समूहों से आते हैं। इसके अतिरिक्त यह तर्क दिया जाता है कि विशाल जंगली भूभाग भी बांध में डूब जाएगा जिससे पारिस्थितिकी सन्तुलन बिगड़ेगा।

;पद्ध सरदार सरोवर बाँध किस नदी पर और किस राज्य में हैं?

;पपद्ध पारिस्थितिकी सन्तुलन क्या है और यह किस प्रकार से बिगड़ सकता है स्पष्ट कीजिए।

;3द्ध निम्नलिखित कार्टून को ध्यानपूर्वक देखिए और नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

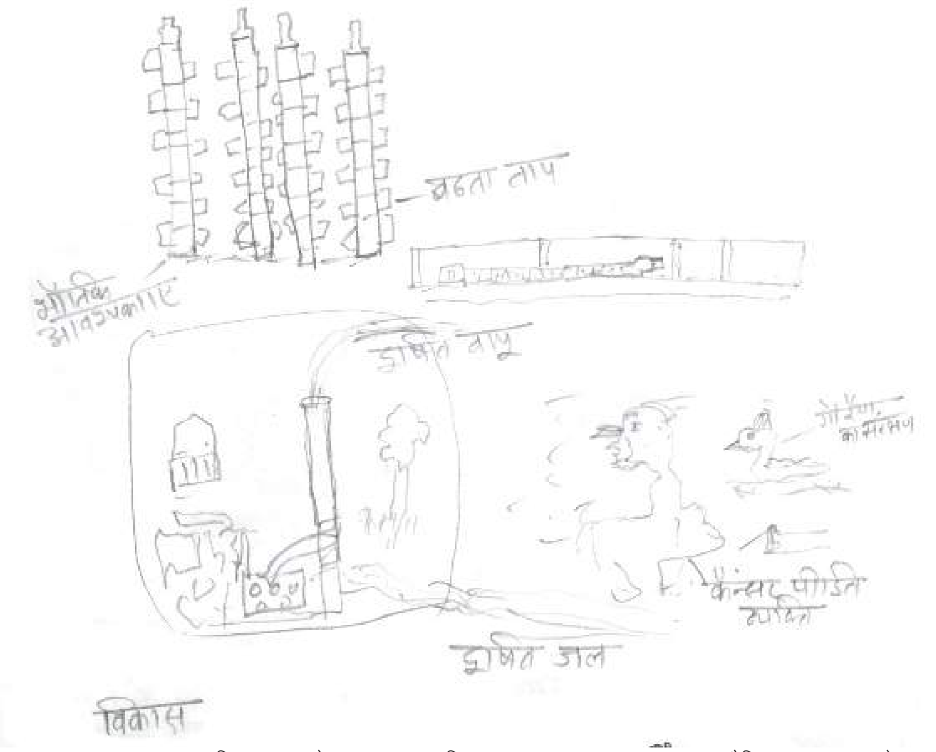

;पद्ध यह किस प्रकार के विकास को दर्शाता है।

;पपद्ध विकास का यह कौन–सा मॉडल या प्रतिरूप है।

;पपपद्ध वैश्विक तापन या ग्लोबल वार्मिंग क्या है इसके प्रभाव से पर्यावरण में हो रहे परिवर्तन को विस्तारपूर्वक समझाइए।

;4द्ध भारत का राजनीतिक मानचित्रा

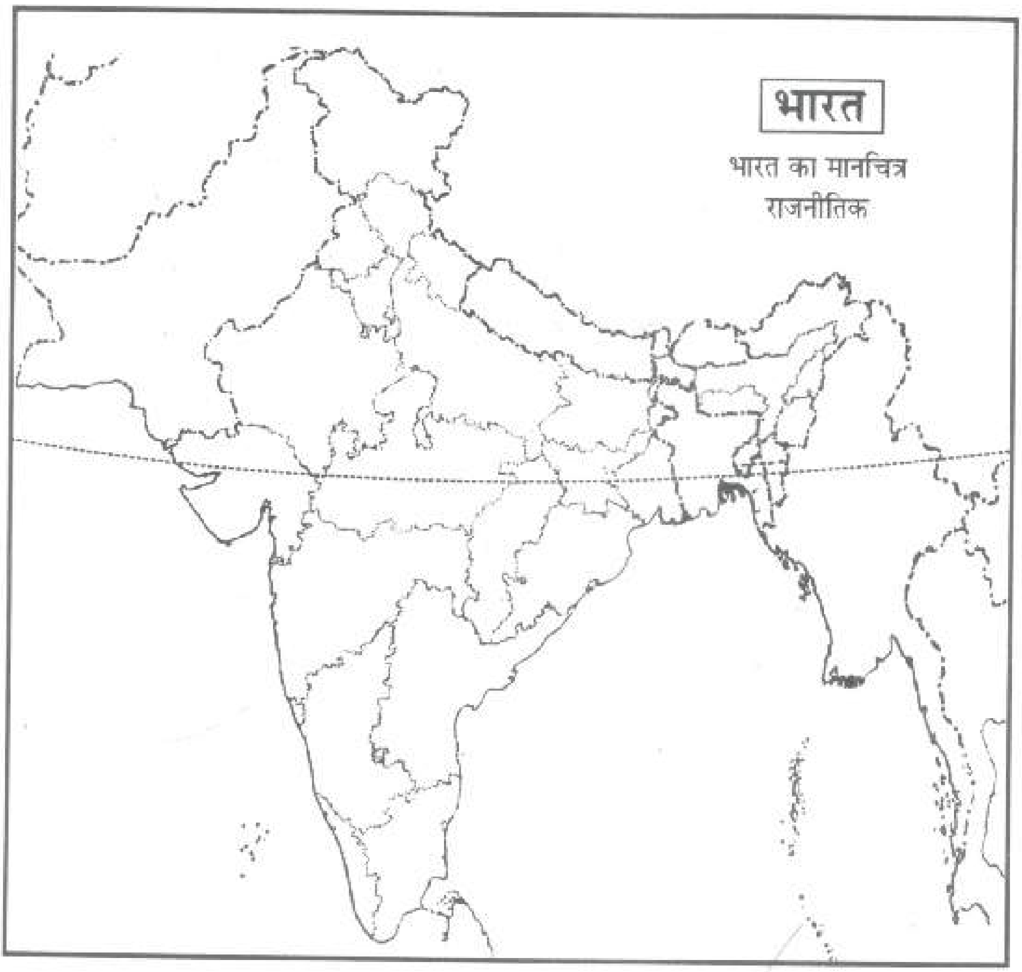

;पद्ध भारत के सर्वाधिक विकसित दो राज्यों को चिह्नित कीजिए, उनके नाम लिखिए।

;पपद्ध सर्वाधिक पिछड़े दो राज्यों को दर्शाइए।

;पपपद्ध ऐसा राज्य जो ग्लोबल वार्मिंग द्वारा हुए प्रभाव से बढ़े समुद्री जल स्तर से जिसके डूबने की आशंका है।

;पअद्ध सर्वाधिक औद्योगिकृत राज्य को दर्शाइए।

dk;Zdyki (Working Sheet)

निम्नलिखित बहुविकल्पीय प्रश्नों में से सही उत्तर का चयन कीजिए।

1.विकास की अवधरणा ने किस सदी के उत्तरार्द्ध में महत्वपूर्ण सफलता हासिल की थी :

;कद्ध बीसवीं सदी ;खद्ध अट्ठारहवी सदी ;गद्ध उन्नीसवीं सदी ;घद्ध सोलहवीं सदी 2.1960 के दशक में किस महाद्वीप के देशों ने औपनिवेशिक शासन से आजादी हासिल की थी :

;कद्ध आस्ट्रेलियाई ;खद्ध यूरोपीय ;गद्ध अनेकी ;घद्ध अमेरिकी 3.केन–सारो–वीवा किस देश के निवासी थे :

;कद्ध मंगोलिया ;खद्ध नाइजीरिया ;गद्ध क्यूबा ;घद्ध सोमालिया 4.सरदार सरोवर परियोजना किस नदी पर बनाई जा रही है। ;कद्ध कावेरी नदी ;खद्ध सतलुज नदी ;गद्ध नर्मदा नदी ;घद्ध महानदी

रिक्तस्थानों की पूर्ती कीजिए :

1 कृ आर्कटिक एवं अंटार्कटिक ध्रुवों की बर्पफ पिघलने व बाढ़ आने से .... एवं .... जैसे निम्न भूमि वाले देश डूब जाएंगे।

2 कृ भाखड़ा नांगल बांध .... नदी पर स्थित है।

3 कृ 1950 में नाइजीरिया के .... प्रान्त में तेल पाया गया था।

4 कृ मानव विकास प्रतिवेदन .... वार्षिक तौर पर प्रकाशित करता है।

निम्नलिखित का मिलान कीजिए :

	विकास का मॉडल	देश
;कद्ध	पूंजीवादी	अमेरिका
;खद्ध	साम्यवादी	ब्रिटेन
;गद्ध	मिश्रित अर्थव्यवस्था	सोवियत संघ

;द लोककल्याणकारी भारत
ा्द्ध

निम्नलिखित वाक्यों के सामने सही और गलत का चिह्न लगाइए :

1.अमेजन के बरसाती जंगलों का विशाल भू–भाग उजड़ता जा रहा है। 2.विकासशील देशों के व्यक्तियों का जीवन स्तर उच्च होता है।

3 कृ विश्व में प्रयुक्त उर्जा का अध्किांश भाग परमाणु उर्जा से प्राप्त होता है।

4 कृ पर्यावरणवादी की जड़ औद्योगिकीरण के खिलापफ 19वीं सदी में विकसित हुए विद्रोह में देखी जा सकती है।

अतिलघुउत्तरीय प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक शब्द या वाक्य में दीजिए :

1 कृ केन सारो वीवो के आन्दोलन के कारण तेल कम्पनियाँ अगोनी से कब भाग खड़ी हुई?

2 कृ भारत में हिमालय के बनों को कटने से बचाने के लिए किस आन्दोलन का जन्म हुआ था? 3.सतत् विकास को अन्य किस नाम से भी जाना जाता है?

4.भौतिक विकास के साथ–साथ मानव कल्याण के लिए अन्य किस विकास की आवश्यकता है?

लघुउत्तरीय प्रश्न

1 कृ विकास को परिभाषित करके इसके के दो प्रतिरूपों की व्याख्या कीजिए।

2 कृ विकास की प्रक्रिया ने किन नए अध्किारों के दावों को जन्म दिया है स्पष्ट कीजिए?

3 कृ पर्यावरण संरक्षण से जुड़े, किन्ही दो आन्दोलनों की कार्य शैली की विस्तृत विवेचना कीजिए।

दीर्घउत्तरीय प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 150 शब्दों से अध्कि न हो प्रत्येक प्रश्न 6 अंक का है। 1.विकास के समक्ष उपस्थित किन्ही चार चुनौतियों को विस्तारपूर्वक समझाइए।

2 कृ विकास के किन्हीं तीन मॉडलों की व्याख्या करके उनकी आलोचना भी लिखिए।

3 कृ विकास की वह कीमत जो समाज को व पर्यावरण को चुकानी पड़ी क्या थी? स्पष्ट कीजिए।

2

dkaxszl iz.kkyh % pqukSfr;ka vkSj iquLFkkZiuk
(Challenges to and Restoration of The Congress System)

अध्गिम उद्देश्य ख्म्तंदपदह व्इरमबजपअमे,

इस पाठ के पश्चात हम :

स भारत की बहुदलीय प्रणाली में कांग्रेस प्रणाली के प्रभुत्व का आंकलन कर सकेंगे। स कांग्रेस प्रणाली को समझ सकेंगे। स नेहरू की मृत्यु के पश्चात उत्तराधिकार तथा कांग्रेस के अंदरूनी संघर्ष के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। स गैर–कांग्रेसवाद तथा 1967 के चुनावी उलटपेफर को समझ सकेंगे। स कांग्रेस पार्टी की ऐतिहासिक जीत ;1971द्ध तथा श्रीमती इन्दिरा गाँधी के नेतृत्व की समीक्षा करने में सक्षम होंगे। स 1969 के पूर्व तथा उसके पश्चात के कांग्रेस के स्वरूप में अन्तर कर पायेंगेऋ तथा स 1970 के दशक के मध्य में आपातकाल की घोषणा की पृष्ठभूमि को समझ सकेंगे। अवधरणा मानचित्रा ;ब्वदबमचज डंचद्ध 1952, 1957, 1962 : आम चुनाव, बहुदलीय व्यवस्था के अन्तर्गत एक दल के प्रभुत्व का दौर कांग्रेस–प्रणाली : एक दल के प्रभुत्व काल में कांग्रेस पार्टी की दोहरी–भूमिका सत्ताधरी के साथ–साथ विपक्ष की भी भूमिका।

1964 : नेहरू की मृत्यु, लाल बहादुर शास्त्री का निर्विरोध् कांग्रेस संसदीय दल का नेता चुना जाना। 1966 : लाल बहादुर शास्त्री की आकस्मिक मृत्यु श्रीमती इन्दिरा गांधी और मोरारजी देसाई के बीच कांग्रेस संसदीय दल का नेता के लिए गुप्त मतदान द्वारा चुनाव।

श्रीमती इन्दिरा गांधी को 2/3 मत प्राप्त हुए, वरिष्ठ नेताओं ;सिंडिकेटद्ध के समर्थन से प्रधनमंत्री बनीं। 1967 : इस चुनाव से कांग्रेस के वर्चस्व का अन्त गठबंधन की राजनीति ;राज्य स्तर परद्ध की शुरूआत

1969 : कांग्रेस पार्टी में विभाजन कांग्रेस पार्टी का कांग्रेस ;आरद्ध तथा कांग्रेस ;ओद्ध में विघटन 1971 : इन्दिरा गांधे के नेतृत्व में कांग्रेस ;आरद्ध की लोकसभा चुनाव में बड़ी जीत कांग्रेस प्रणाली की पुनर्स्थापना। 1970 : के दशक की समस्यायें, जन आन्दोलन इन्दिरागांधे के नेतृत्व को चुनौती 1975 : आपातकाल की घोषणा। 1977 : पहली बार केन्द्र में कांग्रेस पार्टी की पराजय तथा जनता पार्टी की सरकार का गठन।

बहुदलीय प्रणाली में एक दल का प्रभुत्व भारत में संसदीय लोकतंत्रा तथा बहुदलीय प्रणाली की नींव स्वतंत्राता प्राप्ति से पहले ही पड़ चुकी थी। यद्यपि भारत में स्वतंत्राता आन्दोलन की अनेक ारायें थी किन्तु इसकी मुख्य ारा की कमान कांग्रेस पार्टी के हाथ में थी। चुनावी राजनीति में 1937 के चुनाव में ही कांग्रेस का वर्चस्व स्पष्ट नजर आता है। स्वतंत्रा भारत की राजनीति में भी लम्बे समय तक कांग्रेस पार्टी का वर्चस्व रहा। नेहरू के नेतृत्व में कांग्रेस पार्टी ने पहले तीन आम चुनावों में बड़ी जीत हासिल की। नेहरू जी को आधुनिक भारत का निर्माता तथा गांधे जी के राजनीतिक उत्तराधिकारी के तौर पर देखा जाता था। नेहरू की राजनीति के तीन स्तम्भ थे लोकतंत्रा, पंथनिरपेक्षता तथा समाजवाद। 27 मई 1964 को नेहरू जी मृत्यु हो गयी। उनकी मृत्यु से पूर्व ही, बीमारी के दौरान यह प्रश्न देश–विदेश में आम हो गया था कि ''नेहरू के बाद कौन?'' यहाँ तक भारत में लोकतंत्रा के भविष्य पर भी प्रश्न चिह्न लगाया जाने लगा था। क्योंकि इस उपमहाद्वीप में विशेषकर भारत के विभाजन से नए राष्ट्र के रूप में अस्तित्व में आये पाकिस्तान में सत्ता सेना के हाथ में जा चुकी थी। नेहरू के उत्तराध्किारी की समस्या आसानी से सुलझा ली गयी। लाल बहादुर शास्त्राी के रूप में एक दूरदर्शी, कुशल प्रशासक, लोकप्रिय और जमींनी नेता देश को प्रधनमंत्री के रूप में मिला। जिसने पाकिस्तान के साथ युद्ध में देश का सपफल नेतृत्व किया तथा दुश्मन को युद्ध भूमि में ध्ूल चटाई, इसके साथ ही लाल बहादुर शास्त्राी ने देश में खाद्यान्नों का उत्पादन बढ़ाने के लिए भी अथक प्रयास किये। 1966 में लाल बहादुर शास्त्राी की अकस्मात् मृत्यु के कारण देश में राजनीतिक शून्यता ;च्वसपजपबंस अंबबनउद्ध की स्थिति पैदा हो गयी इसके पश्चात् श्रीमती इन्दिरा गाँधे मोरारजी देसाई को पछाड़कर प्रधनमंत्राी बनी, 1967 का आम चुनाव इन्दिरा गांधे के नेतृत्व में लड़ा गया, इस चुनाव में कांग्रेस पार्टी को कई राज्यों में पराजय का सामना करना पड़ा। सत्ताधरी दल अर्थात कांग्रेस पार्टी के अन्दर संकट और गहरा गया, गुटबंदी और सत्ता की होड़ के परिणामस्वरूप 1969 में कांग्रेस का विघटन हो गया। इन्दिरा के नेतृत्व वाली सरकार वाम दलों तथा डी.एम.केकृ के समर्थन से सत्ता में बनी रही। लोकसभा में पूर्ण बहुमत न होने के कारण इन्दिरा गांधे की स्थिति कमजोर थी। इसलियें उसने 1971 में समय से पहले लोकसभा चुनाव कराने का पैफसला किया। ''गरीबी हटाओ'' के नारे पर लड़े गये इस चुनाव में श्रीमती इन्दिरा गाँधे के नेतृत्व वाली काँग्रेस ;आरद्ध की सत्ता में जबरदस्त वापसी हुई, इस प्रकार 1960 के दशक की चुनौतियों और संकट से उभरकर 1971 के चुनाव से काँग्रेस प्रणाली की पुनर्स्थापना हो गयी।

1960 का दशक काँग्रेस पार्टी ही नहीं बल्कि भारत देश के लिए भी संकट और चुनौतियों भरा रहा,

भारत की दृष्टि से निम्न कारणों से इसे ''खतरनाक दशक'' ;कंदहमतवने कमबंकमद्ध कहा जाता है। स 1962 चीनी आक्रमण। स 1964 में नेहरू की मृत्यु। स 1965 भारत–पाक युद्ध, दक्षिण भारत में हिन्दी विरोधी आन्दोलन, कई राज्यों में सूखे की स्थिति और खाद्यान्न संकट, कश्मीर में अलगावादी आन्दोलन आदि। स हिन्दी विरोधी आन्दोलन 1965

स 1966, लाल बहादुर शास्त्राी का आकस्मिक निध्न। स 1966 तीसरी पंचवर्षीय योजना का असपफल रहना। स 1967 पंकृ बंगाल में किसान विद्रोह, दार्जिलिंग के नक्सलवाड़ी क्षेत्रा में नक्सलवाद की शुरूआत स 1969 कांग्रेस पार्टी में विघटन तथा राजनीतिक स्थिरता को खतरा। देश का राजनीतिक नेतृत्व उपरोक्त चुनौतियों से निबटने में सपफल रहा तथा 1971 तक देश इनमें से ज्यादातर चुनौतियों का सपफलतापूर्वक मुकाबला कर चुका था। लेकिन राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर नयी चुनौतियां उभरने लगी। लाल बहादुर शास्त्री एक लोकतांत्रिक व्यवस्था में उत्तराध्किारी तय करना पार्टी के सांसदों तथा पार्टी के नेताओं पर छोड़ना चाहिये। अर्थात् शीर्ष नेतृत्व द्वारा सिर्पफ अपनी इच्छा से उत्तराध्किारी तय नहीं किया जाना चाहिए। नेहरू भी लोकतंत्रा में गहरी आस्था रखते थे इसलिए उन्होंने भी अपना उत्तराध्किारी तय नहीं किया था। नेहरू की मृत्यु के पश्चात कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ नेताओं के समूह जिसे सामूहिक रूप से सिंडिकेट कहा जाता थाμने प्रधनमंत्री पद के लिए शास्त्राी जी का समर्थन किया। यद्यपि मोरारजी देसाई भी दौड़ में शामिल थे किन्तु पिफर भी शास्त्राी जी के पक्ष में सर्व सम्मति से पैफसला लिया गया। के.कामराज, अतुल्य घोष, एस.के.पाटिल, नीलम संजीव रेड्डी, एस निजलिंगप्पा आदि वरिष्ठ नेताओं ने शास्त्राी जी का समर्थन किया। कांग्रेस के इन वरिष्ठ नेताओं के गुट को सिंडिकेट के नाम से जाना जाता था। शास्त्राी जी नेहरू मंत्रीमण्डल में रेलमंत्राी रह चुके थे वह स्वतंत्राता आन्दोलन से भी जुड़े रहे। शास्त्राी जी ने राजनीति में उच्च नैतिक मूल्य स्थापित किए।

लाल बहादुर शास्त्राी के समक्ष चुनौतिया

स दक्षिण भारत में हिन्दी विरोधी आन्दोलन स पाकिस्तान के विरूद्ध युद्ध स मानसून का असपफल रहना तथा गंभीर खाद्यान्न संकट

स पाकिस्तान के विरूद्ध युद्ध के परिणामस्वरूप अमेरिका द्वारा भारत को खाद्यान्न आपूर्ति रोकना स चीन के रूप में आक्रमण पड़ोसी देश भारत के संविधन द्वारा हिन्दी को राजभाषा घोषित किया गया था। अंग्रेजी को पन्द्रह वर्ष के पश्चात अर्थात 1965 में हटाकर हिन्दी और लागू किया जाना था। इस सम्बन्ध में नेहरू की नीति कापफी उदार रही, 7 अगस्त 1959 को नेहरू ने कहा था कि हम अंग्रेजी को वैकल्पिक भाषा के रूप में प्रयोग करते रहेंगे, जब तक लोगों को इसकी जरूरत हो, मैं इसका निर्णय हिन्दी भाषी लोगों पर नहीं बल्कि गैर हिन्दी भाषी लोगों पर छोड़ता हूँ। यदि दक्षिण के लोग हिन्दी नहीं सीखना चाहते तो यह उन पर निर्भर करता है। 1965 में जब हिन्दी लागू करने का समय आया तो डी.एम.केने मद्रास राज्य से हिन्दी विरोधी आन्दोलन शुरू कर दिया, उन्होंने नारा दिया ''हिन्दी कभी नहीं, अंग्रेजी हमेशा'' ;भ्पदकप दमअमतए म्दहसपी मअमतद्ध 26 जनवरी, गणतंत्रा दिवस 1965 को हिन्दी विरोधी आन्दोलनकारियों ने शोक दिवस के रूप में मानाने का पैफसला किया। इस आन्दोलन के कारण हिन्दी को राजभाषा ;वंपिबपंस संदहनंहमद्ध के रूप में लागू करने का निर्णय अनिश्चित काल के लिए टाल दिया गया। हिन्दी विरोधी आन्दोलन का प्रभाव इतना गहरा था कि इसके कारण सत्ताधरी कांग्रेस पार्टी के अन्दर विभाजन की स्थिति पैदा हो गयी। स सितम्बर, 1965 में पाकिस्तान ने युद्ध छेड़ दिया। शास्त्राी जी के कुशल नेतृत्व में हमारी सेनाएँ लाहौर के करीब पहुंच गयी थी लेकिन अन्तर्राष्ट्रीय दबाव के कारण 23 सितम्बर 1965 को युद्ध विराम की घोषणा कर दी गई।

स 1965 में एक ओर युद्ध तथा दूसरी ओर मानसून के असपफल रहने के कारण भारत में गंभीर आर्थिक संकट विशेषकर खाद्यान्न संकट पैदा हो गया। ब्रिटेन तथा अमेरिका द्वारा खाद्यान्न आपूर्ति रोकने से यह संकट और गहरा गया। युद्ध में विजय तथा हरित क्रान्ति की नींव रखकर वास्तव में शास्त्राी जी एक दृढ़ निश्चयी राष्ट्रनायक बन गये। चीन तथा पाकिस्तान की आक्रमकता से निबटने में सेना की भूमिका तथा देश को खाद्यान्नों के मामले में आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य में सेना व किसानों की भूमिका को स्वीकार करते हुए शास्त्राी जी ने ''जय जवान जय किसान'' का नारा दिया। स सोवियत संघ की मध्यस्थता में भारत और पाकिस्तान के बीच ताशकंद ;वर्तमान, उज़्बेकिस्तान की राजधानीद्ध में वार्ता शुरू हुई। शास्त्राी जी तथा पाकिस्तान के राष्ट्रपति अयूब खाँ के बीच कई समझौतों पर हस्ताक्षर दिए गए। ताशकंद में ही 10 जनवरी 1966 को शास्त्राी जी की हृदय गति थमने से आकस्मिक मृत्यु हो गई। 11 जनवरी 1966 को शास्त्राी जी की मृत्यु के पश्चात पिफर एक बार गुलजारी लाल नन्दा को कार्यवाहक प्रधनमंत्राी बनाया गया। लाल बहादुर शास्त्री के बाद इन्दिरा गांधी शास्त्राी जी की मृत्यु के पश्चात पुनः कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं के गुट अर्थात ''सिंडिकेट'' को तय करना था कि अगला प्रधमनंत्राी कौन हो? लेकिन इस बार सर्वसम्मति नहीं बन पाई। सिंडिकेट ने मोरारजी देसाई की बजाय कम अनुभवी 48 वर्षीय युवा, इन्दिरा गांधी का समर्थन किया।

19 जनवरी 1966 को कांग्रेस संसदीय दल द्वारा 169 के मुकाबले 355 मतों द्वारा श्रीमती इन्दिरा गाँधे को अपना नेता चुना गया। कांग्रेस सिंडिकेट कम अनुभवी होने के कारण, अपेक्षा करता था कि इन्दिरा उनके नियंत्राण व प्रभाव में रहकर कार्य करेगी। शुरू में वह ज्यादा मुखर भी नहीं थीं। कम मुखर होने के कारण डॉक्ृ राम मनोहर लोहिया ने इन्दिरा को ''गूंगी गुड़िया'' ष्क्नउइ क्वससष् कहा था। लेकिन थोड़े ही समय में सारी धरणाओं को झुठलाते हुए इन्दिरा ने अपने आपको एक प्रभावशाली व गरीबों के हितों से सरोकार रखने वाली नेता के रूप में स्थापित कर लिया। कांग्रेस पार्टी के अन्दर गुटबाजी बढ़ती जा रही थी तथा पंजाब, नागालैण्ड, मिजोरम में अशान्ति बढ़ रही थी। हिन्दूवादी संगठन गौहत्या के विरूद्ध आन्दोलन कर रहे थे। स मार्च 1966 में श्रीमति इन्दिरा गाँधे ने अमेरिका की यात्राा की। अमेरिका उस समय वियतनाम युद्ध में उलझा था। अमेरिका ने च्स्480 कानून के तहत खाद्यान्न आपूर्ति तथा 900 मिलियन डॉलर की आर्थिक सहायता का आश्वासन इस शर्त पर दिया कि भारत वियतनाम मुद्दे पर उसका समर्थन करे लेकिन भारत के लिए यह अत्यध्कि कठिन शर्त थी। स जुलाई 1966 में श्रीमती इन्दिरा गाँधे ने सोवियत संघ की यात्राा की। नेहरू के समय से ही भारत और सोवियत संघ के बीच ज्यादा नज़दीकियाँ थीं। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में श्रीमती इन्दिरा गांधे ने उस समय एक बड़ा वूफटनीतिक निर्णय लिया जब सोवियत संघ के साथ संयुक्त वक्तव्य में उसने संयुक्त राज्य अमेरिका से अपील की कि वह शीघ्र वियतनाम से अपनी सेनाएँ हटा दे। इससे भारत और सोवियत–संघ के बीच मित्राता बढ़ गयी लेकिन भारत अमेरिकी सम्बन्धें में तनाव बढ़ने लगा। 1967 का आम चुनाव ;ळमदमतंस म्समबजपवद.1967द्ध 1952, 1957 तथा 1962 तक के आम चुनावों में भारत में एक दल अर्थात कांग्रेस पार्टी का वर्चस्व रहा, लेकिन 1967 का चुनाव एक बड़े राजनीतिक बदलाव का सूचक बना, इन चुनावों से भारत में एक दल का प्रभुत्व समाप्त हो गया। चुनावों की पृष्ठभूमि हम पहले जान चुके है कि 1960 का दशक भारत के लिए सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक चुनौतियों तथा राष्ट्रीय जीवन के सभी क्षेत्राों में विपदा और संकट भरा था। दो वर्ष से भी कम समय में दो बेहद लोकप्रिय प्रधनमंत्रियों की मृत्यु के कारण जो राजनीतिक शून्यता की स्थिति पैदा हुई वह सामाजिक और अलगाववादी आन्दोलनों, साम्प्रदायिक दंगों, खाद्यान्न संकट तथा बढ़ती मंहगाई के कारण और अध्कि विकट हो गयी। देश का नेतृत्व इंदिरा गाँधे के हाथों में था जिसे शासन प्रशासन का ज्यादा अनुभव नहीं था, वह लाल बहादुर शास्त्राी मंत्राीमंडल में सूचना एवं प्रसारण मंत्राी रह चुकी थीं लेकिन उसे लगातार पार्टी के वरिष्ठ नेताओं के

दबाव में रहकर कार्य करना पड़ रहा था, वह लगातार सिंडिकेट के चंगुल से छुटकारा पाने के लिए प्रयास कर रही थी। 1967 का चुनाव निम्न परिस्थितियों में लड़ा गया। आर्थिक स्थिति ;म्बवदवउपब ब्वदकपजपवदद्ध 1965–66 तक देश की अर्थव्यवस्था भारी दबाव में थी, 1964–65 में देश के कई राज्यों में सूखा पड़ने से खाद्यान्नों की भारी कमी हो गयी इसके साथ ही 1965 में पाकिस्तान के साथ युद्ध के कारण अमेरिका और ब्रिटेन द्वारा भारत को आर्थिक सहायता और खाद्यान्न आपूर्ति रोक दी गयी। 1962 में चीन तथा 1965 में पाकिस्तान के विरूद्ध युद्ध के कारण देश का रक्षा खर्च बहुत अध्कि बढ़ गया परिणामस्वरूप विकास कार्यों तथा समाजकल्याणकारी योजनाओं के लिए ध्न की कमी पड़ने लगी। कुछ समय पश्चात अमेरिका च्स्480 के तहत खाद्यान्न निर्यात पर सहमत हो गया लेकिन इसके पीछे उसने कुछ शर्ते रख दी। बाहरी दबाव और कुछ आन्तरिक गणनाओं के मद्देनजर 6 जून 1966 को सरकार ने रुपये का 35.5 प्रतिशत अवमूल्यन ;क्मअंसनंजपवदद्ध किया जिसके कारण एक अमेरिकी डालर की कीमत पांच रुपये से बढ़कर सात रुपये हो गयी। रुपये का अवमूल्यन निर्यात बढ़ाने के उद्देश्य से किया गया लेकिन सरकार के इस निर्णय की पार्टी और विपक्ष दोनों ने ही कटु आलोचना की। साम्यवादी दलों ने इस निर्णय की यह कहकर कड़ी आलोचना की कि यह अमेरिका के दबाव में लिया गया निर्णय था। विपक्ष के अलावा पार्टी अध्यक्ष के.कामराज ने भी रुपये के अवमूल्यन का यह कहकर विरोध् किया कि इस निर्णय को लेने से पहले सरकार ने उनकी सलाह नहीं ली। बढ़ती मंहगाई और अनाज की कमी के कारण आम आदमी पर बोझ बढ़ता जा रहा था। विपक्ष द्वारा आयोजित बंद, हड़ताल, रना प्रदर्शनों में लोगों की भागीदारी लगातार बढ़ती जा रही थी यह सरकार और सत्तारी दल अर्थात कांग्रेस पार्टी के लिए चिन्ताजनक स्थिति थी। इसी बीच एक ओर निराशाजनक स्थिति सामने आयी, तीसरी पंचवर्षीय योजना ;1961–66द्ध अपने तय लक्ष्यों से बहुत पीछे रह गयी। इस योजना में 5 प्रतिशत विकास का लक्ष्य रखा गया था लेकिन योजना काल में मात्रा 2.3 प्रतिशत विकास दर ही प्राप्त की जा सकी। पंचवर्षीय योजना की विपफलता के कारण नेहरू द्वारा अपनाई गई नियोजित विकास की नीति पर सवाल किए जाने लगे और चौथी पंचवर्षीय योजना आने में देरी हुई। जन आन्दोलन और संघर्ष ;च्वचनसंत उवअमउमदजे ंदक ेजतनहहसमद्ध 1950 के दशक में भारत में लोगों को स्वतंत्रा भारत की सरकार से बड़ी उम्मीदें थीं लेकिन 1960 के दशक तक आते आते लोगों की यह आशा निराशा में बदल गयी। उन्हें पहले की तरह गरीबी, बेरोजगारी, महंगाई और गैरबराबरी जैसी जटिल समस्याओं का सामना करना पड़ रहा था। 1965–66 में वामपंथी दल गंभीर आर्थिक विषमता को दूर करने के लिए सरकार पर दबाव बना रहे थे। उन्होंने किसान, भूमिहीन तथा मजदूर वर्ग को संगठित कर सरकार और कांग्रेस पार्टी की नीतियों की कटु आलोचना करना शुरू कर दिया वे इस

गंभीर स्थिति के लिए कांग्रेस की नीतियों को उत्तरदायी ठहराने लगे। 1964 में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी में विभाजन हो चुका था, वामपंथियों के कुछ गुटों ने इस दौरान भारत के लोकतंत्रा और संवैधनिक व्यवस्था को चुनौती देना शुरू कर दिया। इन्होंने हिंसात्मक संघर्ष चलाने के लिए मजदूर और किसानों को संगठित किया नक्सलवाड़ी ;पं.बंगालद्ध का किसान विद्रोह ही आगे चलकर देश के अन्य राज्यों में पैफला और नक्सलवाद के रूप में आज भी एक गंभीर समस्या बना हुआ है। दक्षिण भारत में हिन्दी विरोध्, मणिपुर, नागालैण्ड और असम में अलगाववादी गतिविध्यिाँ पूर्वी पाकिस्तान की सह पर जोर पकड़ रही थी। जम्मू–कश्मीर में 1965 के भारत–पाक सैन्य संघर्ष के पश्चात सतही तौर पर शान्ति थी लेकिन आम लोगों में असंतोष भरा पड़ा था जो कुछ समय के पश्चात उभरकर सामने आया। इसके अलावा 1965–66 में देश के कई हिस्सों जैसे रांची, ;बिहार अब झारखण्डद्ध, पलगांव ;महाराष्ट्रद्ध अलीगढ़ ;उ.प्र.द्ध, अहमदाबाद ;गुजरातद्ध में साम्प्रदायिक दंगे हुए जिसके कारण तनाव का माहौल बन गया। ऐसी स्थिति सत्ताधरी कांग्रेस पार्टी के लिए एक बड़ी चुनौती थी। देश और समाज की उथल–पुथल संसद के भीतर भी स्पष्ट नजर आ रही थी, व्यक्तिगत आक्षेप और अनुशासनहीनता के कारण संसद रूपी संस्था का आदर कम हो रहा था। गैर–कांग्रेसवाद ;छवद.ब्वदहतमेेपेउद्ध भारत की बहुदलीय प्रणाली में कांग्रेस पार्टी के प्रभुत्व का एक प्रमुख कारण कमजोर और बिखरा हुआ विपक्ष था, यही कारण था कि कांग्रेस पार्टी को पहले तीन आम चुनावों में 40 से 48 प्रतिशत मत प्राप्त हुए लेकिन लोकसभा में वह आसानी से दो तिहाई सीटे प्राप्त करने में सपफल रही। 1960 के दशक के आर्थिक संकट, राजनीतिक खींचतान तथा सामाजिक आन्दोलनों और संघर्षों की पृष्ठभूमि में गैर–कांग्रेसवाद का जन्म हुआ। डॉ.राम मनोहर लोहिया ने विपक्षी दलों को एकजुट कर एक मंच पर लाकर कांग्रेस के विरूद्ध मोर्चा बनाने की नीति अपनायी जिसे गैर–कांग्रेसवाद के नाम से जाना जाता है। लोहिया एक समाजवादी नेता, विचारक और स्वतंत्राता सेनानी थे। वह कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी, सोशलिस्ट पार्टी और संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी से जुड़े रहे। लोहिया ने गैर कांग्रेसवाद को केवल सत्ता प्राप्ति का साध्न न मानकर इसे एक वैचारिक आधर ;प्कमवसवहपबंस विनदकंजपवद्ध प्रदान करने का प्रयास भी किया। उनका मानना था कि कांग्रेस का शासन और इसकी नीतियाँ गरीब विरोधी है तथा वे समाज में वर्ग विभाजन को कम करने की बजाय उसे बढ़ावा दे रही है, इसलिए गरीब और शोषित वर्ग के हित में विपक्ष को एकजुट होकर कांग्रेस का विरोध् करना चाहिए। लोहिया की नीति से प्ररित होकर 1967 में कई राज्यों में विपक्षी दलों ने कांग्रेस के विरूद्ध मिलकर चुनाव लड़ा, लेकिन व्यवहार में विपक्षी दलों के लिए गैर– काँग्रेसवाद केवल काँग्रेस का विरोध् कर सत्ता प्राप्त करने का माध्यम मात्रा रह गया। कुछ राज्यों में सत्ता में आने के बावजूद वे राजनीति और अर्थव्यवस्था को नयी दिशा देने के बजाय आपसी खींचतानी में लगे रहे।

1952 से 1967 तक के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस पार्टी की स्थिति

तालिका–1

चुनाव वर्ष	लोकसभा चुनाव में	
	मतों का प्रतिशत	जीती गयी सीटों का प्रतिशत
1952	45.0	74.4
1957	47.8	75.1
1962	44.5	72.8
1967	40.7	54.5

स्रोत : रामचन्द्र गुहा, प्दकपं ।जिमत ळंदकीपए च्पबंकवतमद्ध

1967 का चुनाव परिणाम ;जैम टमतकपबज व 1967 म्समबजपवदेद्ध चौथा आम चुनाव ;पफरवरी 1967द्ध इससे पहले के तीन आम चुनावों से कई कारणों से भिन्न था। यह पहला ऐसा चुनाव था जो कांग्रेस पार्टी ने नेहरू की अनुपस्थिति में लड़ा। कांग्रेस पार्टी का नेतृत्व युवा नेता इन्दिरा गांधे कर रही थीं जिसकी अपनी स्थिति, उस समय तक, कापफी कमज़ोर नजर आती थी। इन चुनावों में पहली बार गैर–कांग्रेसवाद के नाम पर विपक्ष एकजुट नजर आया। 1967 के आम चुनाव में 61.1 प्रतिशत मतदाताओं ने अपने मत का प्रयोग किया यह पहले तीन आम चुनावों से अध्कि था, ज्यादा मतदान के कई अन्य कारण हो सकते हैं लेकिन इसका एक कारण आम लोगों में निराशा और असंतोष अवश्य था।

तालिका–2

पहले चार आम चुनावों में लोकसभा में कांग्रेस पार्टी की स्थिति

चुनाव वर्ष	लोकसभा में कुल सीटें	कांग्रेस पार्टी को प्राप्त सीटें
1952	489	364
1957	494	371
1962	494	361
1967	520	283

इन चुनावों में लोकसभा की 520 सीटों में से कांग्रेस पार्टी को केवल 283 सीटों पर विजय मिली, पार्टी के लिए यह आंकड़ा अब तक के सभी आम चुनावों से कम था। कांग्रेस पार्टी के कई दिग्गज व मंत्रीमंडल के सदस्य जैसे कांग्रेस अध्यक्ष के.कामराज, एस.के.पाटिल, अतुल्य घोष आदि सिंडिकेट के प्रमुख नेता चुनाव हार गये। इसके विपरीत इन्दिरा गांधी ने भारी मतों से जीत दर्ज की। कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं की पराजय के कारण इन्दिरा गांधी को पार्टी संगठन में अपनी स्थिति मजबूत करने का मौका मिल गया। कांग्रेस पार्टी में टिकटों के बंटवारे से लेकर चुनाव प्रचार तक, सभी स्तरों में गुटबाजी नजर आयी।

टिकटों के बटवारे में सिडिकेट की मनमर्जी चली, कांगेस के जिन नेताओं को टिकट मिलना चाहिए था पर उन्हें टिकट नहीं मिला उनकी बड़ी संख्या थी उनमें से कुछ ने बागी होकर निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में या अन्य दलों के टिकट पर चुनाव लड़ा, चुनाव परिणामों से यह स्पष्ट हो गया कि कांग्रेस पार्टी को इसका खामियाजा भुगतना पड़ा। 1967 के चुनावों में कांग्रेस पार्टी लोकसभा में तो बहुमत का आंकड़ा छूने में सपफल रही लेकिन कई राज्यों में वह सत्ता से बाहर हो गई। आठ राज्य जिनमें गैर–कांग्रेस सरकारें बनी, वे थेµबिहार, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, पंजाब, पकृ बंगाल, उड़ीसा, मद्रास और केरल। मद्रास राज्य में डी.एम.केकृ पार्टी जो हिन्दी विरोधी आन्दोलन की अग्रदूत रही, को विधन सभा में बहुमत प्राप्त हो गया। स्वतंत्रा भारत में पहली बार इतने अध्कि राज्यों में कांग्रेस सत्ता से बाहर हुई इसे भारत की राजनीति में एक दल अर्थात कांग्रेस पार्टी के प्रभुत्व का अन्त माना जाता है। इन चुनाव परिणामों को राजनीतिक भूचाल कहा गया। गठबंधन सरकारें ;ब्वंसपजपवद ळवअमतदउमदजेद्ध 1967 के चुनाव में गैर कांग्रेसवाद के नाम पर विपक्षी दलों में अस्थाई ही सही, पर एकजुटता नजर आयी। उन्होंने कांग्रेस के विरूद्ध विपक्षी वोटों को बँटने से रोकने का पूरा प्रयास किया, यद्यपि विचारधरा, नीतियों और कार्यक्रमों तथा सत्ता की भागीदारी में उन्होंने एक दूसरे के हितों को समायोजित करने का कोई गंभीर प्रयास नहीं किया। चुनाव के पश्चात पंजाब, बिहार और उत्तरप्रदेश में स्वतंत्रा पार्टी, जनसंघ, बी.के.डी., सोशलिस्ट पार्टी तथा सी.पी.आई ने मिलकर गठबंध्न सरकारों का गठन किया। यद्यपि सी.पी.एम.गठबंध्न सरकारों में शामिल नहीं हुई लेकिन उसका समर्थन भी गैर–कांग्रेसी सरकारों के साथ रहा। गैर–कांग्रेसी सरकारे बनने के लिए या जहाँ राज्यों में मौका मिला कांग्रेस को सत्ता से दूर रखने के लिए वामपंथी, दक्षिणपंथी, साम्प्रदायिक या पंथनिरपेक्ष सभी पार्टियां एक साथ आ गयी। कांग्रेस पार्टी को जहां बहुमत नहीं मिला उसने भी निर्दलीय और अन्य छोटे दलों के साथ मिलकर सरकारें बनाई। गठबंध्न सरकारों में अत्यध्कि अस्थिरता बनी रही। घटक दलों में नीतियों और कार्यक्रमों में भिन्नता तथा मंत्रीपदों के बंटवारे और अन्य कारणों से लगातार खींचातानी चलती रही। इसके कारण राज्यों में राजनीतिक अस्थिरता एक आम बात हो गयी जिस उम्मीद से मतदाताओं ने इन दलों को सत्ता सौंपी थी वह पूरी नहीं हो पायी। 1967 से 1970 के बीच बिहार में सात बार, उत्तर प्रदेश में चार बार, हरियाणा, मध्यप्रदेश और पंजाब में तीन–तीन बार मुख्यमंत्री बदले, गठबंध्न सरकारों वाले राज्यों में कई बार राष्ट्रपति शासन भी लगाना पड़ा। दलबदल ;क्मिबजपवदद्ध रू 1967 के चुनावों के बाद सरकार बनाने और गिराने में निर्दलीय सदस्य और छोटे दलों की भूमिका महत्वपूर्ण हो गयी। ज्यादातर राज्यों में किसी एक दल को बहुमत नहीं मिला जिसके कारण विधयकों की सौदेबाजी और दलबदल की घटनायें आम हो गयी। दलबदल की प्रकृति 1967 के चुनावों के पश्चात मुख्य रूप से देखने को मिलती है। मंत्रीपद और अन्य प्रलोभनों के कारण चुने हुए प्रतिनिध् अपनी दलीय आस्था बदलने लगे। 1967 से 1970 के बीच विभिन्न राज्यों में 800 विधयकों ने दल बदली किया। यहीं से ''आया राम गया राम'' का जुमला प्रचलन में आया

जब 1967 के चुनाव के पश्चात हरियाणा के एक विधायक गयालाल ने दलबदल का एक रिकार्ड कायम किया उसने एक पखवाड़े में तीन बार अपना दल बदला। 1967 के चुनाव में लम्बे समय से केन्द्र और राज्यों में सत्तासीन कांग्रेस पार्टी को कई राज्यों में हार का सामना करना पड़ा। इसके परिणामस्वरूप जो राजनीतिक स्थिति पैदा हुई उसके सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलू थे। सकारात्मक पहलू था, एक दल के प्रभुत्व का अन्त, चुनाव प्रक्रिया में लोगों की आस्था में वृद्धि तथा कांग्रेस पार्टी को आत्मनिरीक्षण का मौका मिला जैसा कि रजनी कोठारी ने कहा है कि 1967 से 1969 तक का समय कांग्रेस पार्टी के लिए चिंतन का समय रहा है। इस राजनीतिक घटनाक्रम के नकारात्मक पहलू थेµदलबदल ;क्मिबजपवदद्ध और निर्वाचित प्रतिनिध्यिों की खरीद पफरोख्त ;भ्वतेम जतंकपदहद्ध मौका परस्ती ;व्चचवतजनदपेउद्ध तथा राजनीतिक विचारधरा की अनदेखी। 1967 का चुनाव कांग्रेस पार्टी के लिए एक बड़ा राजनीतिक झटका था लेकिन उसकी समस्याएँ यहीं खत्म नहीं हुई। पार्टी के अन्दर गुटबाजी और असंतोष चुनावों के पश्चात खुलकर सामने आने लगा। आगे हम देखेंगे कि किस प्रकार इन्दिरा गांधि ने कांग्रेस के अन्दर की गुटबाजी और सत्ता संघर्ष को एक विचारधरा की लड़ाई में तब्दील कर दिया तथा अपने विरोध्यिों को पीछे छोड़ आम मतदाता के साथ–साथ सत्ता पर अपनी पकड़ मजबूत कर ली। कांग्रेस में विघटन एवं पुनर्गठन ;ब्वदहतमैेचसपज ंदक तमबवदेजपजनजपवदद्ध 1967 का चुनाव आजादी के बाद विपक्षी पार्टियों के लिए पहला ऐसा मौका था जब वे अपने आपको कांग्रेस पार्टी के विकल्प के रूप में स्थापित कर सकती थी क्योंकि कई राज्यों में मतदाताओं ने उनमें विश्वास व्यक्त किया थाऋ लेकिन उनकी आपसी खींचतान और हठधर्मिता के कारण उन्होंने यह मौका गवां दिया। गैर कांग्रेसी सरकारो का बार–बार गिरना तथा कई राज्यों में राष्ट्रपति शासन लगने के कारण विपक्षी एकता मौकापरस्ती नजर आने लगी। दूसरी तरपफ कांग्रेस पार्टी का अर्न्तकलह लगातार गहराता जा रहा था, पार्टी के आन्तरिक मतभेद और संघर्ष सार्वजनिक होने लगे। चुनाव के पश्चात इन्दिरा गांधि प्रधनमंत्री तो बन गयी किन्तु उसे अपने विरोधि मोरारजी देसाई को उपप्रधनमंत्री के साथ–साथ वित्त मंत्रालय भी सौंपना पडा। 1967 तक इन्दिरा गांधि की कोई एक विशिष्ट विचारधरा नहीं थी लेकिन अब इन्दिरा गांधि नेहरू की विचारधरा का आधर अर्थात समाजवाद पर विशेष जोर देने लगी। इन्दिरा गांधि को समाजवाद की ओर प्रेरित करने का श्रेय कापफी हद उसके मुख्य सचिव पी.एन.हकसर को जाता है। यह उसकी ही सलाह का ही परिणाम था कि 1967 के चुनाव के पश्चात बैंक राष्ट्रीयकरण भूमि सुधर तथा सार्वजनिक क्षेत्रा का गुणगान किया जाने लगा। सार्वजनिक क्षेत्रा को भारत की एकता का आधर बताया गया जो ब्राह्मण, क्षत्रिाय, वैश्य, दलित, अल्पसंख्यक आदि समाज के सभी वर्गों को समान अवसर प्रदान करता है। इन्दिरा गांधी लाभ न कमाने की स्थिति में भी सार्वजनिक क्षेत्रा को संरक्षण देने लगी, उसका कहना था कि अर्थव्यवस्था को मजबूत आधर प्रदान करने में सार्वजनिक क्षेत्रा की भूमिका महत्वपूर्ण है। 12 मई 1967 को कांग्रेस कार्यसमिति ने दस सूत्राीय कार्यक्रम स्वीकार किया जिसमें बैंक और बीमा राष्ट्रीयकरण, शहरी आय और सम्पत्ति का परिसीमन करना, प्रिवी पर्सेज को समाप्त करना, खाद्यान्न का

सरकारी वितरण, भूमि सुधर, ग्रामीण गरीबों को भूखण्ड देने जैसे प्रावधनों पर प्रस्ताव स्वीकार किया गया इन्दिरा गांधी की इन समाजवादी नीतियों से कांग्रेस के वरिष्ठ नेता खुश नहीं थे। वे इन्दिरा गांधी की आलोचना करने लगे लेकिन अब स्थिति ऐसी हो चुकी थी कि उनकी आलोचना को इन्दिरा गांधी की आलोचना कम और समाजवाद की आलोचना या गरीबों के विरोधी के रूप में देखा जाने लगा। इन्दिरा गांधी ने ीरे–ीरे खुद को प्रगतिशील ;च्तवहतमेपअमद्ध और सिंडिकेट को परम्परावादी के रूप में स्थापित कर दिया। इन्दिरा गांधि को अपने इस संघर्ष में कांग्रेस के युवा नेताओं ;ल्वनदह ज्नताोद्ध का पूरा समर्थन प्राप्त था जो लोकतांत्रिाक समाजवाद में आस्था रखते थे। 1967 में कांग्रेस पार्टी के पफरीदाबाद अध्विेशन में इन्दिरा गांधी ने घोषणा कर डाली कि ''हम समाजवाद के रास्ते से पीछे नहीं हट सकते''। इन्दिरा गांधी की समाजवादी नीतियों के मार्ग में सिर्पफ कांग्रेस सिंडिकेट ही बाध पैदा नहीं कर रहा था बल्कि अब न्यायपालिका के साथ भी उसका संघर्ष शुरू हो गया था। 1967 में ही गोलकनाथ वाद ;ब्मेद्ध में सर्वोच्च–न्यायलय ने मौलिक अध्किारों में संशोध्न करने की संसद की शक्ति को समाप्त कर दिया। इस निर्णय से इन्दिरा गांधी का समाजवादी एजेन्डा लटक गया। न्यायपालिका के साथ संघर्ष 1973 में केशवानन्द भारती वाद के साथ समाप्त हुआ, लेकिन इससे पहले इन्दिरा गांधी के लिए कांग्रेस सेंडिकेट से निपटना तथा अपनी सत्ता को स्थापित करना जरूरी हो गया था। राष्ट्रपति चुनाव और कांग्रेस विभाजन 1969 ;च्तमेपकमदजपंस म्समबजपवद ंदक ैचसपज पद ब्वदहतमे.1969द्ध मई 1969 में डॉ.जाकिर हुसैन की मृत्यु के पश्चात राष्ट्रपति पद खाली हो गया तत्कालीन उपराष्ट्रपति वी.वी. गिरि को कार्यवाहक राष्ट्रपति बनाया गया। यदि 1950 से चली आ रही परम्परा पर चला जाता तो वी.वी. गिरि को ही कांग्रेस पार्टी का राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार बनाया जाना चाहिए था लेकिन कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं ;सिंडिकेटद्ध द्वारा गिरि की बजाय नीलम संजीवा रेड्डी को कांग्रेस पार्टी का राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार घोषित किया गया। रेड्डी इन्दिरा गांधी के विरोधी किन्तु सिंडिकेट के करीबी माने जाते थे। इसलिए इन्दिरा गांधी ने पार्टी उम्मीदवार की बजाय भूतपूर्व ट्रेड् यूनियन नेता, वी.वी. गिरि का समर्थन करने का पैफसला किया 12 जुलाई 1969 को कांग्रेस संसदीय बोर्ड द्वारा नीलम संजीवा रेड्डी को पार्टी की ओर से राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार घोषित किया गया के.कामराज, पाटिल, मोरारजी देशाई आदि ने नीलम संजीवा रेड्डी के पक्ष में मतदान किया जबकि इन्दिरा गांधि और पफखरूद्दीन अली अहमद ने वी.वी. गिरि के पक्ष में मतदान किया, पार्टी में मतभेद को देखते हुए पार्टी अध्यक्ष निजलिंगप्पा ने मतदान में भाग नहीं लिया। नीलम संजीवा रेड्डी को चार दो से पार्टी का उम्मीदवार घ ाेषित कर दिया गया, इन्दिरा गांधि के लिए यह सामान्य लोकतांत्रिाक प्रक्रिया नहीं बल्कि व्यक्तिगत पराजय थी। इसके परिणामस्वरूप इन्दिरा गांधि के तेवर और अध्कि आक्रामक हो गये 19 जुलाई 1969 को कार्यवाहक राष्ट्रपति वी.वी. गिरि ने एक अध्यादेश द्वारा 14 बैंको के राष्ट्रीयकरण की घोषणा की, अगस्त 1969 में सरकार के इस निर्णय को सर्वोच्च न्यायलय में चुनौती दी गई, सर्वोच्च न्यायलय ने सरकार के इस निर्णय को रद्द कर दिया। सर्वोच्च न्यायलय के निर्णय को बेअसर करने के लिए पुनः अध्यादेश जारी कर दिया गया, इसके साथ ही राजा महाराजाओं को मिलने वाली पेंशन ;प्रिवी पर्सेजद्ध को भी समाप्त कर दिया गया। मोरारजी देसाई जो कि उपप्रधनमंत्राी और वित्त मंत्राी जैसे दो महत्वपूर्ण पदों पर आसीन थे, भी सिंडिकेट के अन्य नेताओं की

तरह इन्दिरा गांधे के इन निर्णयों से सहमत नहीं थे। 20 अगस्त 1969 को राष्ट्रपति चुनाव इन्दिरा गांधी और सिंडिकेट के बीच जोर अजमाने का माध्यम बन गया। पार्टी ने व्हिप ;ॅीपचद्ध जारी किया कि सभी कांग्रेसी सांसद और विधयक पार्टी के अध्किारिक उम्मीदवार नीलम संजीवा रेड्डी के पक्ष में मतदान करें, इन्दिरा गांधे ने पार्टी व्हिप ;ॅीपचद्ध का उल्लंघन कर कांग्रेसी सांसदों और विधयकों से खुलेआम अपील की कि वे अपनी अन्तरात्मा की आवाज के अनुसार अपने मत का प्रयोग करें। इस बार बाजी इन्दिरा गांधे के हाथ लगी, उसकी पसन्द का उम्मीदवार, वी.वीकृ गिरि चुनाव जीत गये जबकि कांग्रेस पार्टी का अध्किारिक उम्मीदवार नीलम संजीवा रेड्डी चुनाव हार गये। कांग्रेस पार्टी के इन्दिरा और सिंडिकेट के बीच की खींचातानी चरम पर पहुंच गयी थी अब पार्टी का विघटन लगभग तय था। राष्ट्रपति चुनाव में पार्टी के उम्मीदवार हराने के कारण पार्टी निंजलिनगप्पा ने इन्दिरा गांधे पर पार्टी विरोधे गतिविध्यिों में शामिल होने का आरोप लगाया। 12 नवम्बर 1969 को इन्दिरा गांधे को कांग्रेस पार्टी से निष्काषित कर दिया गया, इन्दिरा गांधे ने अपने निष्कासन को गैर कानूनी बताया इसके विपरीत निजलिंगप्पा का कहना था इन्दिरा गांधे अपने व्यक्तिगत हितों को पार्टी और राष्ट्र के हितों से अध्कि महत्व दे रही है उसने आगे कहा कि इन्दिरा गांधे मुठ्ठीभर चापलूशों से घिरी हुई हैं वह कांग्रेस की लोकतांत्रिक समाजवाद की विचारधरा से खिलवाड़ कर रही हैं। इन्दिरा गांधे के निष्कासन के साथ ही कांग्रेस पार्टी में विभाजन हो गया इन्दिरा गांधे के साथ लोकसभा के 210 तथा राज्य सभा के 104 सदस्य कांग्रेस से अलग हो गये। लोकसभा में बहुमत प्राप्त करने के लिए इन्दिरा गांधे ने सी.पी.आई.और डी.एम.के का समर्थन लिया। कांगेस पार्टी के विघटन के पश्चात कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं ने कांग्रेस ;ओद्ध और इन्दिरा गांधे वाले गुट ने कांग्रेस ;आरद्ध नामक पार्टियों का गठन किया, कांग्रेस ;ओद्ध और कांग्रेस ;आरद्ध दोनों ही वास्तविक या असली कांग्रेस होने का दावा करते रहे। विभाजन के पश्चात इन्दिरा गांधे ने कहा कि कांगेस में विघटन व्यक्तित्व संघर्ष या सत्ता की होड़ नहीं था बल्कि यह समाजवादी और प्रगतिशील तथा यथास्थिति के बीच का संघर्ष था। इन्दिरा गांधे खुद को समाजवाद का प्रतीक और कांग्रेस सिंडिकेट को यथास्थितिवादी के रूप में स्थापित कर दिया। दिसम्बर 1969 के पार्टी अध्विेशन में इन्दिरा गांधे की सोच के अनुरूप एक प्रस्ताव पारित किया गया जिसमें घोषणा की गयी कि कांग्रेस ;आरद्ध जातिविहीन और वर्गविहीन समाज की स्थापना के लिए वचनबद्ध है, इसमें यह भी घोषणा की गई कि 1970—71 तक भूमि सुधर कानूनों को पूरी तरह लागू कर दिया जायेगा तथा 1970 तक सभी बिचौलियों को हटा दिया जायेगा। इन्दिरा गांधे को विभाजन से पूर्व और पश्चात कांग्रेस पफॅारम पफॅार सोशलिस्ट एक्सन का पूरा समर्थन प्राप्त रहा क्योंकि वह उन्हीं नीतियों पर चल रही थी जो इस पफॅारम का उद्देश्य था। सी.पी.आई द्वारा भी कांग्रेस ;आरद्ध का समर्थन उसकी समाजवादी नीतियों के कारण किया गया उनका मानना था कि इन्दिरा एक जन नेता ;डें समंकमतद्ध थी तथा वह परम्परावादी कांग्रेस व्यवस्था से हटकर कुछ नई प्रगतिशील विचारधरा के साथ आगे बढ़ रही थी।

इन्दिरा गांधे के समाजवाद प्रेरित निर्णय और नीतियाँ सर्वोच्च न्यायलय में एक के बाद एक अटकते जा रहे थे, लोकसभा में कोई विध्यक या संशोध्न पास भी हो जाते थे तो राज्य सभा में पर्याप्त बहुमत न होने के कारण, पारित नहीं हो पा रहे थे इन परिस्थितियों में इन्दिरा गांधे ने लोकसभा को भंग कर जनता के बीच जाने का पैफसला किया। चुनाव—1971

इन्दिरा गांधे ने लोकसभा चुनाव अपने तय समय से 14 महीने पहले कराने का पैफसला किया। लोक सभा के मध्यावध् िचुनाव कराने के अपने निर्णय को न्यायोचित ठहराते हुए इन्दिरा गांधे ने ऑल इंडिया रेडियों पर कहा कि मेरी सरकार आम लोगों के लिए बेहतर जीवन, उनकी आकांक्षाओं को पूरा करने तथा न्यायोचित समाज—व्यवस्था के प्रति वचनबद्ध है लेकिन कुछ प्रतिक्रियावादी ताकते इसमें बाध पैदा कर रही हैं। चुनाव में उतरने से पहले इन्दिरा सरकार के लिए कृषि क्षेत्रा से शुभ संकेत मिला 1969—70 में आनाज का रिकार्ड उत्पादन हुआ यह वह समय था जब हरित क्रान्ति ;ळतममद तमअवसनजपवदद्ध का असर नजर आने लगा था, खाद्यान्न समस्या कापफी हद तक हल हो चुकी थी, इन्दिरा गांधे नेहरू की विचाराधरा के आधरभूत सिद्धान्त लोकतांत्रित समाजवाद और पंथनिरपेक्षता को भुनाने में जुटी थी। आम लोगों की उम्मीदों तथा पिछले कुछ वर्षों की अपनी आर्थिक नीतियों के अनुरूप इन्दिरा गांधे ने 1971 के लोकसभा चुनाव में नारा दिया ''गरीबी हटाओ'' ;त्मउवअम चवअमतजलद्ध विपक्ष इन्दिरा की बढ़ती लोकप्रियता से चिन्तित था इसलिए जनसंघ, स्वतंत्रा पार्टी, कांग्रेस ;ओद्ध, सोशलिस्ट था कुछ अन्य क्षेत्राीय पार्टियों ने मिलकर इन्दिरा और कांग्रेस ;आरद्ध के विरूद्ध ग्रांड अलायन्स ;ळतंदक ।ससपंदबमद्ध बनाने का निर्णय लिया, इस बार भी विपक्षी मतों को बंटने से रोकने का प्रयास किया गया, इन्दिरा गांधे का मिलकर मुकाबला करने की रणनीति बनाई गई। ग्रांड अलायन्स ने नारा दिया ''इन्दिरा हटाओ'' ;त्मउवअम प्दकपतंद्ध नारा दिया। यह नारा विपक्ष की दिशाहीनता का परिचायक बन गया, आम लोगों के समक्ष कोई नया विकल्प रखने की बजाय विपक्ष की रणनीति सिर्पफ इन्दिरा गांधे के विरोध् तक सीमित रह गयी। इस पर इन्दिरा ने भी चुटकी लेते हुए कहा था, ''वे ;विपक्षद्ध कहते है इन्दिरा हटाओ हम कहते हैं गरीबी हटाओ''। पैफसला जनता को करना था। ''गरीबी हटाओ'' के नारे ने कांग्रेस ;आरद्ध और इन्दिरा गांधे को विपक्ष की तुलना में नैतिक ऊँचाईयाँ प्रदान की वह एक प्रगतिशील और सकारात्मक बदलाव लाने वाले नेता के रूप में दिखने लगी, इसके विपरीत विपक्ष परम्परावादी और गरीब विरोधी नजर आने लगा। इन्दिरा गांधे के आकर्षक व्यक्तित्व और गरीबी हटाओं के नारे का मतदाओं पर खूब जादू चला। भूमिहीन किसानों, मजदूरों, दलित और अल्पसंख्यक वर्गो ने अप्रैल 1971 के चुनाव में कांग्रेस ;आरद्ध के पक्ष में जमकर मतदान किया। इन्दिरा गांधे की पार्टी, कांग्रेस ;आरद्ध को 518 में से 352 सीटे प्राप्त हुई, दूसरे स्थान पर सी.पी.एम.रही जिसे केवल 25 सीटें प्राप्त हुई। इस बात को मीडिया, बुद्धिजीवी वर्ग, सत्ता पक्ष और विपक्ष सभी स्वीकार करते थे कि 1971 का चुनाव इन्दिरा गांधे के इर्द—गिर्द लड़ा गया था। इन्दिरा गांधे अपने विरोध्यिों को हर प्रकार से धराशायी करने में सपफल रही। कुछ विचारकों का कहना था कि 1952 के चुनाव में जिस उम्मीद से आम जनता ने नेहरू के हाथ में देश की बागडोर सौंपी थी, 1971 में उसी आशा और विश्वास से देश की जनता ने उनकी बेटी को सत्ता सौंप दी।

कांग्रेस प्रणाली की पुनर्स्थापना ;त्मेजवतंजपवद व ब्विदहतमै लेजमउद्ध 1971 के चुनाव से जनता ने स्पष्ट कर दिया था कि वह असली कांग्रेस किसे मानती थी। इस अप्रत्याशित जीत के बाद कांग्रेस ;आरद्ध को कांग्रेस ;आईद्ध अर्थात इन्दिरा कांग्रेस और बाद में सिर्पफ कांग्रेस के नाम से जाना जाने लगा। यह तय हो चुका था कि इन्दिरा कांग्रेस ही असली कांग्रेस थी। इस प्रकार 1960 के दशक की अनेक चुनौतियों तथा 1969 के विघटन के पश्चात 1971 की विजय से कांग्रेस प्रणाली की पुनर्स्थापना हो जाती है लेकिन सही मायने में देखा जाय तो यह पुनर्स्थापना सिर्पफ लोकप्रियता और चुनाव जीतने तक सीमित थी, वास्तव में इन्दिरा कांग्रेस विघटन से पहले की कांग्रेस से बिल्कुल भिन्न थी। पार्टी के संगठन, स्वरूप कार्यप्रणाली में भारी बदलाव आ गया था। अब यह विभिन्न विचारधरा वाले समूहों को शरण देने वाली पार्टी नहीं रही, पार्टी में व्यक्तिपूजा और परिवारवाद हावी हो गया। स्वतंत्रा विचारधरा रखने वालों की बजाय चापलूसों का पार्टी में महत्व बढ़ गया। वैचारिक मतभेद और आन्तरिक संघर्षो में सामजंस्य स्थापित करने की कांग्रेस पार्टी की पारम्परिक क्षमता इन्दिरा कांग्रेस में नहीं रही। प्रधनमंत्री पद, प्रधनमंत्राी कार्यालय, प्रधनमंत्राी के मुख्य सचिव और सलाहकारों में सत्ता का अत्यध्कि केन्द्रीकरण हो गया। राज्यों में मुख्यमंत्रियों की नियुक्ति राज्य कांग्रेस के विधयकों द्वारा नहीं बल्कि पार्टी के केन्द्रीय नेतृत्व या हाईकमान के द्वारा होने लगी, यह लोकतंत्रा की मूल भावना के विरूद्ध था। दूसरी तरपफ ''गरीबी हटाओ'' के नारे से आम जनता में बड़ी उम्मीद जगी थी, लेकिन अर्थव्यवस्था के स्वरूप में कुछ खास बदलाव नहीं हुआ गरीबी हटने की बजाय आने वलो वर्षों में आम आदमी पर आर्थिक बोझ बहुत अध्कि बढ़ गया। ''गरीबी हटाओ'' के नारे से बनी उम्मीद निराशा में और निराशा जन आक्रोश व जन आन्दोलन का रूप लेने लगी। इन्दिरा गांधी की सत्ता को प्रत्यक्ष चुनौती मिलने लगी, इन्दिरा गांधि द्वारा जन संघर्ष और विपक्षी आन्दोलनों को दबाने के लिए जो कदम उठाया उससे भारत में संवैधनिक लोकतंत्रा पर संकट के बादल मंडराने लगे। 1975 में आपातकाल की घोषणा करनी पड़ी 1977 में कांग्रेस पहली बारे केन्द्र में सत्ता से बाहर हो गयी।

(Working Sheet)

उपरोक्त कार्टून के आधर पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्र.1 उपरोक्त कार्टून किस घटना को दर्शाता है?

प्र.2 विजयमाला पहना व्यक्ति कौन है? उसे किसका समर्थन प्राप्त था? प्र.3 कांग्रेस को नीचे लेटा हुआ पराजित क्यों दिखाया गया है?

उपरोक्त मानचित्रा के आधर पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्र.1 उपरोक्त मानचित्रा क्या दर्शाता है?

प्र.2 किन्हीं दो दक्षिणी राज्यों के नाम लिखिए जिनमें गैर कांग्रेसी सरकार बनी। प्र.3 1967 के चुनाव की सबसे प्रमुख विशेषता क्या थी?

प्र.4 1967 के आम चुनाव के पश्चात यदि आप अमृतसर से कलकत्ता तक रेल यात्राा करते तो आप कौन से चार गैर कांग्रेस शासित राज्यों से गुजरते?

निम्नलिखित परिच्छेद/अवतरण को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधरित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

.... नेहरू के समय के संघीय, लोकतांत्रिक तथा वैचारिक गठबंध्न के विपरीत इन्दिरा गांधी ने कांग्रेस पार्टी को अत्यध्कि केन्द्रीकृत तथा अलोकतांत्रिाक संगठन बना दिया। लेकिन बिना राजनीति की प्रकृति बदले यह संभव नहीं था। लोकलुभावन नारे तथा व्यक्ति पूरा इस नई राजनीति का प्रयाय बन गया। नारे जिन्होंने 1970 के दशक के शुरूआत में बड़ी चुनावी सपफलता दिलायी लेकिन शासन की नीतियों तथा प्रशासन में इन नारों का प्रभाव बहुत कम नजर आता है। 1970 का दशक पुरानी कांग्रेस की मृत्यु तथा नयी कांग्रेस के उदय का काल था। प्र.1 1971 के चुनाव में कौन से नारे ने श्रीमती इन्दिरा गांधी को रानजीतिक सपफलता दिलाने में मदद की? प्र.2 1970 के दशक को पुरानी कांग्रेस की मृत्यु का काल क्यों कहा गया है?

प्र.3 नेहरू और इन्दिरा के समय की कांग्रेस में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

क्रियाकलाप ;।बजपअपजलद्ध वर्तमान समय में भारत के 29 राज्यों में शासन दलों तथा मुख्यमंत्रियों के नामों की सूची तैयार कीजिए। इसकी तुलना 1967 के विधनसभा चुनाव के परिणामों से कीजिए।

dk;Zdyki (Working Sheet)

1. निम्न बहुविकल्पी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

;द्ध चीन द्वारा भारत पर आक्रमण का वर्ष :

;पद्ध 1956 ;पपद्ध 1954 ;पपपद्ध 1962 ;पअद्ध 1965

;इद्ध नेहरू की मृत्यु :

;पद्ध 1962 ;पपद्ध 1964 ;पपपद्ध 1971 ;पअद्ध 1969

;बद्ध इन्दिरा गांधी पहली बार प्रधनमंत्री बनी :

;पद्ध 1960 ;पपद्ध 1963 ;पअद्ध 1965 ;अद्ध 1966

;कद्ध कांग्रेस पार्टी में विभाजन का वर्ष :
;पद्ध 1965 ;पपद्ध 1966 ;पपपद्ध 1969 ;पअद्ध 1970

2. निम्न प्रश्नों में सही / गलत बताइये।

;पद्ध तीसरी पंचवर्षीय योजना अपने लक्ष्य प्राप्त करने में सपफल रही। ; द्ध

;पपद्ध नेहरू की मृत्यु के समय के.कामराज कांग्रेस पार्टी का अध्यक्ष था। ; द्ध

;पपपद्ध कांग्रेस के विघटन के समय निजलिंगप्पा कांग्रेस का अध्यक्ष था। ; द्ध

;पअद्ध लाल बहादुर शास्त्राी जी की मृत्यु ताशकंद ;वर्तमान उज़्वेकिस्तान में हुईद्ध। ; द्ध

3कृनिम्न में मिलान कीजिए।

स्तम्भ ;कद्ध स्तम्भ ;खद्ध

;पद्ध सिंडिकेट	;द्ध एक निर्वाचित प्रतिनिध् िजिस पार्टी के टिकट पर चुनाव जीतता है उसे छोड़कर दूसरी पार्टी में शामिल हो जाय।
;पपद्ध दलबदल	;इद्ध गरीबी हटाओ
;पपपद्ध नारा	;बद्ध कांग्रेस और उसकी नीतियों के विरोध् में विपक्षी पार्टियों की एक जुटता।
;पअद्ध गैर कांग्रेसवाद	;कद्ध कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं का प्रभावशाली गुट

4कृ रिक्त स्थानों की पूर्ति करो :
;पद्ध कांग्रेस के विघटन के पश्चात पार्टी .... और .... में बंट गयी
;पपद्ध .... और .... तथा कुछ अन्य पार्टियों ने मिलकर महागठबंध्न / महाजोट ;ळतंदक ।ससपंदबमद्ध बनाया।

5. निम्न प्रश्नों के उत्तर एक शब्द या एक वाक्य में दीजिए।
;पद्ध 1969 में राष्ट्रपति पद के लिए कांग्रेस पार्टी का अध्किारिक उम्मीदवार कौन था?
;पपद्ध प्रिवी पर्सेज क्या था?
;पपपद्ध 1966 में कांग्रेस संसदीय पार्टी ने किन दो उम्मीदवारों को प्रधनमंत्राी पद के लिए चुनाव में उतारा था?
;पअद्ध कांग्रेस सिंडिकेट के किन्ही दो नेताओं के नाम बताइए।

6. 1960 के दशक को भारत के दृष्टिकोण से खतरनाक दशक क्यों कहा जाता है?

7. ''1971 के चुनाव से कांग्रेस प्रणाली की पुनर्स्थापना तो हो गयी किन्तु यह कांग्रेस पहले की कांग्रेस से बिल्कुल भिन्न थी।'' तर्क सहित स्पष्ट कीजिए।

3

Hkkjr ds fons'k lEcU/k
(India's Foreign Relation)

परिचयμप्रत्येक राष्ट्र के लिए उसकी आन्तरिक नीतियों के समान ही विदेश नीति भी समान रूप से महत्त्वपूर्ण होती है। एक राष्ट्र के तौर पर भारत का जन्म विश्वयुद्ध की पृष्ठभूमि में हुआ था। वर्तमान युग में दुनिया के सभी राष्ट्र वाणिज्य, व्यापार, साहित्य, कला एवं अनेक अन्य क्षेत्रों में परस्पर एक दूसरे पर निर्भर है। भारत प्राचीन काल से ही शान्तिप्रिय देश रहा है। भारत सदैव से पड़ोसी राज्यों से मित्राता के सम्बन्ध चाहता रहा है। स्वतंत्राता से पूर्व भारत की विदेश नीति अंग्रेजों के हाथ मे थी और दुनिया दो महाशक्तिशाली गुटों में बटी हुई थी। ऐसे में अनेक विकासशील देशों ने शक्तिशाली देशों को ध्यान में रखकर अपनी विदेश नीति बनाई ताकि उनसे अनुदान प्राप्त कर सकें लेकिन भारत ने किसी भी शक्ति गुट में सम्मिलित न होने का निर्णय लिया एवं गुट निरपेक्षता के सिद्धान्त का पालन किया। Hkkjr dh fons'k uhfr ds dqN izeq[k fuèkkZjd rRo bl izdkj gSA

;1द्ध प्रतिरक्षा : भारत संसार का सबसे बड़ा लोकतन्त्रा है यह तीन और समुद्र से तथा उत्तर में हिमालय से घिरा हुआ है प्राचीन काल तथा मध्यकाल में उत्तर–पश्चिम के मार्गों

;2द्ध प्राचीन आदर्श : प्राचीन काल से ही 'बसुधैवकुटुम्बकम्' भारतीय जीवन का आदर्श रहा